वर्ष –10, अंक – 1
अंक : जुलाई–सितम्बर 2020
UGC-CARE LISTED S.N. - 61

[redacted]
ISSN NO. 2320-5733

# समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

# मलिन बस्ती के बालकों की शैक्षिक प्रगति में अभिभावकों के व्यक्तित्व गुणों की भूमिका का अध्ययन

डॉ. रश्मि गोरे
अंबिका सिंह

**सारांश**

शिक्षा मनुष्य के जीवन में उपयुक्त दिशा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का उद्देष्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। बालकों की शैक्षिक प्रगति का निर्धारण उसके अभिभावकों के व्यक्तित्व गुणों से लगाया जाता है। लेकिन वास्तव में मात्र अभिभावकों के व्यक्तित्व गुण ही नहीं बल्कि कई कारण भी उत्तरदायी होते है, जैसे–मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति आदि। प्रस्तुत शोध पत्र में मलिन बस्ती के बालकों की शैक्षिक प्रगति पर अभिभावकों के व्यक्तित्व गुणों की भूमिका का अध्ययन किया गया। जिसमें अभिभावकों के व्यक्तित्व गुणों के परीक्षण के लिए कानपुर नगर की मलिन बस्तियों में रहने वाले कक्षा नौ में अध्ययनरत बालकों के 200 अभिभावकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया, तथा जिनका चयन यादृच्छिक एवं सोदेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है। प्रदत्त संकलन हेतु डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित 'डाइमेंशनल पर्सनालिटी इनवेन्टरी' (संशोधित 2015) का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक प्रगति के रूप में पूर्व परीक्षा (कक्षा आठ) में प्राप्त अंको को प्रतिषत के रूप में लिया गया है। परिणाम स्वरूप यह पाया गया कि मलिन बस्ती के बालकों की शैक्षिक प्रगति पर अभिभावकों के व्यक्तित्व गुणों का प्रभाव सार्थक रूप से नहीं पड़ता है। जिसका कारण अभिभावकों का बालकों के साथ समय व्यतीत न कर पाना पाया गया। मलिन बस्ती में रहने वाले बालकों की शैक्षिक प्रगति में अभिभावकों के व्यक्तित्व गुणों की अपेक्षा विद्यालयी वातावरण तथा परिवारिक वातावरण अधिक प्रभावित करता हैं।

मुख्य शब्द-मलिन बस्ती, बालक, शैक्षिक प्रगति, अभिभावक, व्यक्तित्व गुण और कानपुर नगर।

## प्रस्तावना

वर्तमान समय में मलिन बस्तियाँ समाज का आवश्यक अंग बन गई हैं। मलिन बस्ती वह स्थान है जहाँ कमरों में भीड़ रहती है। यह स्थान गंदगी से परिपूर्ण और बीमारियों का केंद्र होता है। औद्योगिक क्रांति मलिन बस्तियों की जनसंख्या बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यद्यपि वर्तमान समय में प्रदूषण मुक्त वातावरण बनाने के लिए सरकार तथा स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि अभी भी मलिन बस्तियाँ प्रदूषित वातावरण में बसी हुयी है। उनको सरकार द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं का पूर्णरूपेण लाभ नहीं मिल पा. रहा है। शिक्षा के अभाव के कारण उनमें जागरूकता, नवीनता एवं वैज्ञानिकता का अभाव पाया जाता है। जिसका प्रभाव बालकों की शिक्षा पर पड़ता है। ऐसा पाया गया है कि शिक्षित अभिभावक अपने बालकों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देते हैं अपेक्षाकृत अशिक्षित अभिभावक के। बालक के विकास के लिए आवश्यक है कि अभिभावक बालकों के साथ प्रेम एवं स्नेह का व्यवहार करें, तभी बालकों में आपसी प्रेम एवं सहयोग की भावना का जन्म होगा और वह सामाजिक रूप से सफल नागरिक बन सकेगा अन्यथा की स्थिति में वह अपनी मनमानी करने लगेगा और समाज विरोधी बन जाएगा। बालक जन्म के समय न सामाजिक होता है और न असामाजिक होता है। वह आयु में जैसे-जैसे बड़ा होता है वह समाज के नियमों, प्रथाओं, रूढ़ियों आदि को सीखता है। वह सामाजिक वातावरण तथा पारिवारिक वातावरण से जो भी सीखता है, उनसे जो उसे अनुभूतियाँ प्राप्त होती हैं। वह अनुभूतियाँ उसके व्यवहार और व्यक्तित्व में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बालक का घर और परिवार ही सबसे पहले उसका सामाजिक वातावरण होता है। परिवार के अनुभव ही बालक की अभिवृत्तियों का निर्माण एवं विकास करते हैं। इसमें सबसे अहम भूमिका बालक के अभिभावक के व्यक्तित्व गुणों की होती है। माता-पिता तथा उनकी संतानों के व्यक्तित्व संबंधी कुछ गुणों में समानता दिखलाई पड़ती है वह वंशानुक्रमीय ही होती है। व्यक्तित्व संबंधी कुछ गुण परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं' (डी. एन. श्रीवास्तव, 2012)।